समूह के जरिये आजीविका से जुड़ रहीं महिलाएं

रांची जिला अंतर्गत ओरमांझी प्रखंड कृषि के लिए प्रसिद्ध है. पुरुष ही नहीं, यहां की महिलाएं भी प्रगतिशील किसान के तौर पर उभर रही हैं. खेती-बारी के अलावा महिला समूह से जुड़ कर महिलाएं व्यवसाय भी कर रही हैं. इसके जरिये खुद और अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल रही हैं. समूह से कम ब्याज पर मिलनेवाले लोन का लाभ लेकर ग्रामीण महिलाएं खुद भी व्यवसाय कर रही हैं और पति को भी रोजगार का जरिया प्रदान करा रही हैं. सरलाटोली चकला और ओरमांझी की दो महिलाएं ऐसी हैं, जिन्होंने समूह से जुड़ कर अपनी जिंदगी में खुशहाली लायी है.

ऑटो से सबिता के परिवार में आयी आर्थिक समृद्धि

समूह से जुड़ने के बाद अपने पति के लिए सबिता देवी ने खरीदा ऑटो.

ओरमांझी के सरलाटोली चकला गांव की सबिता देवी का आज घर और समाज में मान बढ़ा है. सबिता के मुताबिक, महिला समूह आज उनकी खुशहाली की वजह है. इससे उनके जीवन में बदलाव आया है. वह आज लोगों से आराम से बात कर लेती हैं. अधिकारियों से बात कर लेती हैं. इतना ही नहीं, जागरूक होने के कारण अब उन्हें और उनके परिवार को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है. सबिता अपने आस-पास के ग्रामीणों को भी सरकारी सुविधा का लाभ लेने में मदद करती हैं.

जिला रांची

अब किसी के दबाव में नहीं रहना पड़ता है : सबिता देवी

सबिता देवी बताती हैं कि समूह से जुड़ने का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि अब उन्हें किसी के दबाव में नहीं रहना पड़ता है. पहले सिर्फ घर में ही रहना पड़ता था, पर अब काम के सिलसिले में घर से बाहर जाना पड़ता है. इससे दुनिया को देखने व समझने का मौका मिलता है. अधिकारियों से बात करने में परेशानी नहीं आती. समूह से जड़ने का एक और फायदा यह होता है कि जरूरत पड़ने पर पैसे आसानी से मिल जाते हैं. मुसीबत के समय में किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता है. घर बनाने के समय भी इन्होंने समूह से लोन लिया था.

गुलाब महिला स्वयं सहायता समूह से शुरू हुआ सफर

सबिता देवी पहले घरेलू महिला थीं. घर और खेत दोनों जगह काम करना उनकी दिनचर्या में शामिल था, लेकिन वर्ष 2013 से सबिता की जिंदगी में बदलाव आया. इसी साल सीआरपी की दीदियां सरलाटोली आयीं और महिलाओं को समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित कीं. समूह के बारे में पूरी जानकारी हासिल करने के बाद सबिता गुलाब स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. घर में एक ऑटो पहले से था, लेकिन एक ऑटो की कमाई से घर चलाना मुश्किल था. कभी पति चलाते थे, तो कभी ससुर. सबिता ने इस परेशानी से खुद को निकालने के लिए समूह से डेढ़ लाख रुपये लोन लेकर सितंबर 2017 में पति के लिए एक सीएनजी ऑटो खरीदा. अब घर में दो ऑटो होने से आमदनी में बढ़ोतरी हुई. आमदनी बढ़ने से समूह का लोन जहां चुकता कर रही हैं, वहीं परिवार का खर्च भी पहले की अपेक्षा अब आसानी से चला रही हैं. बच्चे भी अब अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं. अपनी सफलता के लिए सबिता महिला समूह को धन्यवाद देते हुए कहती हैं कि महिला समूह की वजह से उनकी जिंदगी में यह बदलाव आया है.

दुकान के सहारे नंदा की जिंदगी में आयी खुशहाली

समूह से जुड़ने के बाद खोली गयी दुकान में नंदा देवी.

रांची-रामगढ़ मुख्य मार्ग के किनारे ओरमांझी के शंकर चौक के पास स्थित है नंदा देवी की दुकान. नंदा के लिए यह सिर्फ एक दुकान नहीं, बल्कि जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता और ऊपर चढ़ने की सीढ़ी है. दुकान में श्रृंगार का सामान, कोल्ड ड्रिंक्स और बच्चों के खाने-पीने की चीजें बिकती हैं. इस दुकान के जरिये ही नंदा के घर में खुशहाली है. परिवार गरीबी से बाहर निकल रहा है. वह खुद का घर बनाने की तैयारी कर रही हैं. पति बाहर काम करते हैं. दो बच्चे रांची में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं. नंदा देवी अगर यह सब कुछ कर पा रही हैं, तो उसके पीछ महिला समूह की ताकत है. महिला समूह से जुड़ने के बाद उनमें यह हिम्मत आयी है.

जिला रांची

आजीविका कृषि मित्र बनीं नंदा

एनआरएलएम द्वारा संचालित समूह से जुड़ने के बाद नंदा देवी को आजीविका कृषि मित्र के तौर पर चुना गया. फिर नंदा का चयन कृषि मित्र के तौर पर हुआ. इन्हें कृषि मित्र का प्रशिक्षण मिला. प्रशिक्षण के बाद नंदा ने अपने गांव में किसानों को मदद करना शुरू किया. इसके साथ ही खुद की खाली पड़ी जमीन में भी खेती-बारी शुरू कर दीं. नंदा बताती हैं कि इस काम के एवज में उन्हें पैसे भी नहीं मिले. अब सिर्फ खुद के लिए खेती करती हैं. अधिक होने पर बाजार में बेचती हैं. इसके साथ ही नंदा ने केले के 150 पौधे भी लगाये हैं. फिलहाल उसमें फल नहीं आया है. 2014 में खोलीं दुकान

2008 से हुई समूह की शुरुआत

नंदा देवी और उनके घर के आस-पास की महिलाओं ने वर्ष 2008 में ही जीवन ज्योति महिला समूह का गठन किया. 12 सदस्य थे. उस वक्त समूह में पांच रुपया प्रति सदस्य जमा किया जाता था. आज प्रति सदस्य समूह में 30 रुपये जमा करती हैं. नंदा देवी समूह में अध्यक्ष के तौर पर जुड़ीं. इसके बाद जब झारखंड में आजीविका मिशन के तहत महिला समूह का निर्माण होने लगा, तो जीवन ज्योति महिला समूह भी आजीविका से जुड़ा. कृषि मित्र का कार्य करते हुए नंदा देवी ने वर्ष 2014 में श्रृंगार दुकान खोलीं. इसके लिए उन्होंने समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया. धीरे-धीरे दुकान चल निकला और अच्छी कमाई होने लगी. अपनी दुकान की ही बदौलत आज नंदा अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला पा रही हैं. दुकान का पूरा लोन उन्होंने चुका दिया है. आगे अब घर बनाने की तैयारी कर रही हैं.

- समूह की बदौलत आज नंदा देवी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रही हैं